

स्वामीविवेकानंद तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा संबंधी दार्शनिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण

नीतूशर्मा, हिन्दी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है जिसका शिक्षा के क्षेत्र में समृद्ध इतिहास और परंपरा है। इसके कारण आक्रमणों की निरंतर श्रृंखला के कारण, राष्ट्र ने अपनी राजनीतिक एकता प्राचीन शिक्षा प्रणाली और सांस्कृतिक परंपरा खो दी। स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर, जो 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान रहते थे 19वीं सदी के पूर्वार्ध में कई मुद्दों पर समान विचार थे। दोनों ने बनाया स्वतंत्रता आंदोलन और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दोनों ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक साधन माना। आक्रमणकारियों ने देश में प्रचलित सार्वभौमिक शिक्षा की पारंपरिक प्रणाली को नष्ट कर दिया, और इन दोनों प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस व्यवस्था को पुनः स्थापित करने एवं राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए एक अनिवार्य शर्त पर विचार किया। वे दोनों एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे जो मूल्य आधारित होने के साथ-साथ प्राचीनता में निहित थी।

मुख्य-शब्द: स्वतंत्रता आंदोलन, शताब्दी के उत्तरार्ध, सामाजिक परिवर्तन, प्रगतिशील पुनर्निर्माण।

शोध कार्य की विधि

इस कार्य में अन्वेषक स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार और व्यवहारवर्तमान सन्दर्भ में उनके महत्व एवं महत्ता को जानने की दृष्टि से दार्शनिक पद्धति अपनाकर वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करेगा। हालाँकि अध्ययन का शीर्षक इसे चिह्नित कर सकता है शिक्षा दर्शन के क्षेत्र के अंतर्गत अन्वेषक ने इसे सामाजिक दृष्टि से देखा है। विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार वर्तमान की कई समस्याओं का समाधान करेंगे भारत इस तथ्य के आलोक में कि वे 19वीं और 20वीं में सामाजिक-राजनीतिक प्रेरणा के वास्तविक स्रोत थे।

अध्ययन में जोर देने का क्षेत्र

शोध का जोर स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों में भारतीय दर्शन और संस्कृति के आलोक का अध्ययन करने पर रहा है। राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा को एक उपकरण के रूप में उपयोग करने के उनके विचार और तरीके भी एक हैं। अध्ययन में एक माध्यम के रूप में शिक्षा के उनके उपयोग को भी शामिल किया गया है। शोधकर्ता ने इसमें अपनाई जाने वाली विधियों को भी शामिल किया है। इस अध्ययन में अपनाई गई शोध पद्धति विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक है। इन दोनों प्रमुख हस्तियों के शिक्षा पर अपने-अपने स्वतंत्र विचार थे।

शोधपरिणाम

स्वामी विवेकानंद की शिक्षा संबंधी दार्शनिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण विवेकानन्द

शोधकर्ता ने स्वामी विवेकानन्द पर किये गये कुछ अध्ययनों का अध्ययन किया है तथा कुंजम्मा ने इसकी एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी है:

(कुंजम्मा.1979) स्वामीविवेकानंद का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। अध्ययन स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व, व्यावहारिक वेदांत,

सिस्टर निवेदिता, अलसिंगा पेरुमल आदि को संबोधित उनके पत्र और एक समाज सुधारक के रूप में उनका योगदान संक्षेप में उनके विचारों पर केन्द्रित था। सभी में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है [स्वामी विवेकानन्द के पत्र , एक अध्ययन (1979)]। अविनाशीलिंगम (1974) ने स्वामीजी के विचारों के कई पहलुओं की विस्तार से जांच की है प्राचीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य , शिक्षक की भूमिका, शिष्य के गुण, सोचना सीखना, ब्रह्मचर्य, प्रेम की शक्ति, एकाग्रता, मन के तरीके नियंत्रण इत्यादि और सुझाव दिया कि आधुनिक शिक्षा के अनुरूप होनी चाहिए। [स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन(1974)]। नायर (1980) ने स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों पर व्यापक अध्ययन किया, अध्ययन में स्वामीविवेकानन्द के शिक्षा के दार्शनिक , मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक आधार के योगदान को सामने लाया गया। इसमें इस पर भी फोकस किया गया कि कैसे विवेकानन्द के योगदान ने सामाजिक , आर्थिक और राजनीतिक जीवन के प्रगतिशील पुनर्निर्माण में मदद की। [स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार(1980)]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार सामाजिक क्रिया के आधार की तुलना ईसाई आधार का अध्ययन 1964 में सोमेन दास द्वारा किया गया है। प्राथमिक और माध्यमिक दोनों इस अध्ययन में सूत्रों का उल्लेख किया गया है। अध्ययन में स्वामी विवेकानन्द का विश्लेषण सिद्धांतों के संबंध में सामाजिक संरचना के हिंदू आदर्शों पर दर्शन ईसाई दर्शन में नीचे किया गया है , अतः अन्वेषक तुलना करने का भी प्रयास करता है ईसाई सिद्धांतों ने विवेकानन्द के निर्माण को किस हद तक प्रभावित किया (1964)

नारी की प्राचीन भारतीय अवधारणा: उन्होंने भारतीय नारीत्व का उत्कृष्टता ढंग से महिमामंडन किया है। स्वामीजी के अनुसार किसी राष्ट्र की प्रगति किसकी प्रगति पर निर्भर करती है? महिलाएं। शिक्षा ने महिलाओं की जीवन स्थिति में सुधार किया और उन्हें उनके अधिकारों का अधिक जागरूक बनाया। विवेकानन्द ने उनकी सामाजिक पराधीनता को दूर करने की आवश्यकता पर बल दिया और महिलाओं को न केवल उनके स्वयं के व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षित करना बल्कि देश की प्रगति के लिए भी शिक्षित करना कहिए। (लक्ष्मि. 2000). विवेकानन्द का मानवतावाद मूलतः गहनता से मानव , आवश्यक रूप से सार्वभौमिक और अभिन्न अध्यात्मवादी है , यह उसका स्वयं का एक सहज बहिर्प्रवाह है सभी अस्तित्व की आध्यात्मिक एकता और समग्रता का गहरा आंतरिक अहसासज्ञान और वेदांतिक आध्यात्मिक की सिंथेटिक और संक्षिप्त दृष्टिपरंपरा है। विवेकानन्द एक ठंडे सिद्धांतकार नहीं बल्कि एक सहृदय भविष्यवक्ता थे। उसमें , सिर, हृदय और दिमाग की सभी क्षमताएं शक्ति के सामंजस्य में पूर्णता संतुलित थीं। विवेकानन्द की सार्वभौमिकता उनकी अपनी आध्यात्मिक अनुभूति में निहित है । अस्तित्व की एकता उनकी दार्शनिक शिक्षा की पृष्ठभूमि थी। विवेकानन्द का मानवतावाद का लक्ष्य मनुष्य का व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर पूर्ण विकास करना है। वास्तव में, धर्म, उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण से, मानवतावाद का मुखपत्र है और इसे हमेशा मानव जाति की भलाई की ओर निर्देशित किया जाना चाहिए। उसके लिए धर्म है अहसास ; प्रत्येक व्यक्ति में दिव्यता की अनुभूति। विवेकानन्द ने पाया शिक्षा मनुष्य निर्माण का सबसे प्रभावी साधन है। विवेकानन्द ने चरित्र निर्माण पर बहुत जोर दिया। एक और सबसे बड़ा मानवतावाद का महत्वपूर्ण पहलू जिसे उन्होंने सर्वाधिक महत्व दिया वह है प्रेम। स्वतंत्रता , जो मानवतावाद की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है , इसमें विवेकानन्द के विचार केंद्रीय स्थान रखते हैं।

विवेकानन्द का व्यावहारिक वेदांत (अरुणभास्कर.2004):विवेकानन्द का दर्शननव-वेदांत हैं। यह वैज्ञानिक शब्द वेदांत है जिसकी व्याख्या आधुनिक तर्कशास्त्र में की गई है। उन्होंने अपने दर्शन को अद्वैत के सिद्धांतों पर आधारित कियाशंकर , विवेकानन्द ने मनुष्य और समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं के लिए उनकी व्याख्या की। उसकानैतिक सिद्धांत मुक्ति की सीमा 'आत्म-त्याग' पर आधारित है। विवेकानन्द के लिए, दर्शन और धर्म में मानवतावाद प्रमुख स्वर है। धर्म व्यक्त हैमानवता , विश्व बंधुत्व और मानवतावाद की सेवा में। स्वामीजी के अनुसारस्वयं का परिवर्तन और उद्धार केवल दिव्य समाज में ही संभव है।स्वामी विवेकानन्द ने बताया कि विश्व के धर्म परस्पर विरोधी नहीं हैंवे एक दूसरे के पूरक थे। उन्होंने महसूस किया कि इसका मुख्य कारणभारतीयों का वर्तमान पतन उनमें विश्वास की कमी है। वह यह भी बताते हैं किइस दुनिया में जो बुराइयाँ मौजूद हैं वे पूरी तरह वस्तुनिष्ठ नहीं बल्कि व्यक्तिपरक हैं।स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में कर्म ही पूजा है।(कविता2005)। स्वामीजी का कार्य दर्शन या कर्म योग एक दृष्टिकोण है जिसके तहत कार्य कोअपने सांसारिक स्तर से उन कार्यों तक ऊपर उठाया जाता है जो समग्र रूप से मानवता स्वयं के उत्थान को संबोधित करते हैं। विवेकानन्द के दर्शन में कर्म की अवधारणा की पूजा की जाती हैमुख्य रूप से इस अहसास से उत्पन्न होता है कि व्यक्ति परमात्मा का एक अभिन्न अंग है। इसकी प्राप्ति के लिए विवेकानन्द ने चार प्रकार के अनुशासन सुझाये, उनमें भी कर्मयोग इस अर्थ में अधिक लोकप्रिय प्रतीत होता हैसामान्य मनुष्य अपने दैनिक आचरण से इस सर्वोच्च आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। काम यहाँ स्वामीजी का विशेष योगदान काम को पूजा के अर्थ में समान करना है कि , प्रकृति चाहे जो भी हो, अच्छा काम हमेशा अनुशासित होता है। उनका दर्शन काम हमें यह भी विश्वास दिलाता है कि 'निष्कामकर्म' या निःस्वार्थ काम ही सुगंधित फूल है। परोपकारी प्रेम, यह प्रेम मनुष्य को प्रभु के प्रति समर्पण की भावना से कार्य कराएगा।विवेकानन्द का कार्य दर्शन पूरी तरह से सामग्री को बाहर नहीं करता हैवह मनुष्य की आवश्यकताएँ जानते हैं , कि भौतिक समृद्धि के बिना मानव विकास असंभव होगा। स्वामी जी के अनुसार पेशेवर के माध्यम से विशेषज्ञ ज्ञान और कौशल के अधिग्रहण पर आधारितशिक्षामनुष्य का कर्म है।

विवेकानन्द एक 'हिन्दू पुनरुत्थानवादी' से अधिक एक बुद्धिजीवी और सुधारवादी थे , हालाँकि, उन्होंने सकारात्मक और सशक्त रूप से सामाजिक-धार्मिकताको प्राथमिकता दी। शैक्षिक सरोकार अद्वैत वेदांत, जिस पर उनका दृढ़ विश्वास था , समकालीन भारत की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार था, मौलिक, टिकाऊ और दीर्घकालिक हैशिक्षा न केवल भारत बल्कि सभी की मूलभूत समस्याओं का व्यापक समाधान है । इसलिए, भारत में समकालीन राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक समस्याएंविवेकानन्द द्वारा समर्थित कुछ शैक्षिक विचारों पर अपेक्षाकृत कम प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। विवेकानन्द का शैक्षिक विचार संभावित एवं भविष्यवादी विचार है , पूरे देश में सभी स्तरों पर मूल्य शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता हैशिक्षा से संबंधित भाषणों और लेखों में, विवेकानन्द का जोर प्रेम, आत्म-बोध, भाईचारा, सेवा जैसे विशिष्ट बाह्य मूल्यों का समावेशजिम्मेदारी, सहानुभूति, अहिंसा, कर्तव्यपरायणता, सहनशीलता स्वतंत्रता, साहस, आत्मनिर्भरता, श्रम की गरिमा, ईमानदारी, सच्चाई और निर्भयता इसी पर हैआज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में कुछ रुझानों और विकास के साथ तालमेल बिठाएं।मिश्रा , एस. (1986), क्रिटिकल स्टडी ऑफ एजुकेशनल फिलॉसफी एंड टीचिंग मेथड ऑफस्वामी विवेकानन्द , अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे(1) वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्रदान करने हेतु नवीन शिक्षा दर्शन (वेदांत दर्शन) का अध्ययन करना , तथा (2) स्वामी विवेकानन्द के

शैक्षणिक विचार की बदलती परिस्थितियों में उपयोगिता का मूल्यांकन करना शोध था। स्वामीजी द्वारा स्वयं या उनकी प्रेरणा से अतिरिक्त स्रोत जानकारी संग्रह के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया। स्थापित संस्थाओं में कार्यरत कार्मिकों से व्यक्तिगत चर्चा। अध्ययन से पता चला: स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि विश्व के सभी धर्मों की नींव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वेदांत दर्शन पर आधारित थी। वेदांत दर्शन का आधार व्याससूत्र यही था। इसके तीन भाष्यों में से- द्वैत वाद , विशिष्टाद्वैत वाद और अद्वैत वाद , स्वामीजी अंतिम अद्वैत वाद के समर्थक थे। स्वामी जी की वेदों और उपनिषदों में बहुत आस्था थी। वे भारतीय संस्कृति के बहुत बड़े समर्थक थे और भारत में ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के खिलाफ थे। उन्होंने भारत में आधुनिक संदर्भ में वेदांत दर्शन के प्रचार-प्रसार की दिशा में उनके प्रयास और विदेश में सभी को निर्देशित किया , और मानवता को पीड़ा और हताशा से मुक्त करने के लिए रामकृष्ण मिशन मठ की स्थापना की। वे यह भी चाहते थे कि लोग आर्थिक रूप से संपन्न बनें, और शिक्षा उनके लिए इन लक्ष्यों को पूरा करने का एक साधन थी। शिक्षा उनके अनुसार यह न केवल सूचनाओं के विभिन्न टुकड़ों का एक संग्रह , बल्कि एक व्यक्ति के आंतरिक स्व की अभिव्यक्ति थी। आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ स्वामी जी शिक्षा की व्यावसायिक क्षमताओं पर भी जोर दिया। व्यापक अर्थ में, यह उनके अनुसार पाठ्यक्रम का आधार, शिक्षण के तरीके, एकाग्रता, आत्म-अनुभव, प्रश्न-उत्तर आदि संपर्क शामिल हैं , वह दृढ़ता से संस्कृत के अध्ययन के पक्षधर थे। उन्होंने वार्षिक परीक्षा प्रणाली की आलोचना की उनके द्वारा स्थापित व्यापक संस्थाओं के मूल्यवान होने की वकालत की गई। मजबूत नैतिक चरित्र और विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षकों के लिए आवश्यक था। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में विद्यार्थी का महत्वपूर्ण स्थान था। एक शिक्षक और उसके शिष्य के बीच पारस्परिक संबंध सबसे वांछनीय थे। उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली में आत्म-अनुशासन पर जोर दिया और इससे उबरने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये। स्वामीजी के विभिन्न विचारों में आदर्शवाद और व्यावहारिकता तथा समस्याओं का संतुलन था जो वर्तमान भारतीय व्यवस्था में बहुत उपयोगी पाए गए। राव, के. (2010) ने टैगोर और गांधी के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना था। महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानन्द के दर्शन की शैक्षिक तुलना करना। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य के संदर्भ में दोनों के दर्शन का शैक्षिक अध्ययन करना। दोनों महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानन्द ने गतिविधि उन्मुख शिक्षा का प्रस्ताव रखा। महात्मा गांधी ने कहा था कि शिक्षा बच्चे को अपने भविष्य की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बनाती है। आदर्शवादी के रूप में वे यही चाहते थे बच्चा नैतिक रूप से आध्यात्मिक रूप से मजबूत हो। प्रकृतिवादी होने के नाते वे पूर्ण स्वतंत्रता देना चाहते थे। उसकी आवश्यकताओं , आकांक्षाओं, योग्यताओं और योग्यताओं का ध्यान पूर्वक ध्यान रखना चाहिए। वे गतिविधि उन्मुख शिक्षा चाहते थे जो उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए। महात्मा गाँधी जी और स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित विचार थे की भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए उसे एक सिंथेटिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। उच्च शिक्षितों के लिए भी रोजगार की कोई गारंटी नहीं है इस समस्या के समाधान के लिए शिक्षा को सैद्धांतिक कम और तकनीकी अधिक होना चाहिए जिसे प्राप्त करने के बाद व्यक्ति अपनी आजीविका कमाने में सक्षम होता है। वर्तमान स्कूली शिक्षा प्रणाली में शिक्षक ने तानाशाह की भूमिका अपनाई है , जो बच्चे के चरित्र को जबरदस्ती ढालने की कोशिश करता है। महात्मा गांधी जी और स्वामी विवेकानन्द दोनों ही खुद को किसी खास विचारधारा से जोड़ते हैं, वे आदर्शवादी, प्रकृतिवादी और व्यवहारवादी थे। आदर्शवादी होने के नाते वे चाहते थे कि बच्चा नैतिक रूप से आध्यात्मिक रूप से मजबूत हो। जैसा प्रकृतिवादी वे बच्चे को पूर्ण स्वतंत्रता देना चाहते थे। उसकी जरूरतें , आकांक्षाएं, योग्यताएं और क्षमताओं का सावधानीपूर्वक

निदान किया जाना चाहिए। वे गतिविधि उन्मुख शिक्षा चाहते थे जो उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए, इस प्रकार वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य हो सकता है। यदि भारत को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं में उत्कृष्टता प्राप्त करनी है, तो वह महात्मा गांधी जी तथा स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित विचारों का एक सिंथेटिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। सिंह एल. (2014) ने वर्तमान परिदृश्य में महिला शिक्षा पर विवेकानन्द के दृष्टिकोण के बारे में अध्ययन किया। इस पेपर में साक्षरता में लैंगिक अंतर को दर्शाने का प्रयास किया गया है सरकार द्वारा बनाई और कार्यान्वित की गई वर्तमान नीतियों को रेट करें भारत में महिला शिक्षा के विकास को बढ़ावा देना। महिला शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण और आज का दृष्टिकोण साक्षरता दर में लैंगिक अंतर मिटाने का मिशन दोनों एक ही संकेत देते हैं। प्रसाद भैया सुभाष चन्द्र (1999) शिक्षा के अर्थ पर चर्चा करते हुए स्वामीजी की मनुष्य-निर्माण की शिक्षा का अध्ययन निश्चित रूप से कई लोगों के लिए आधुनिक शिक्षा को प्रभावित करने वाली गलतफहमियाँ एवं त्रुटियाँ एक सुधारात्मक है। आत्मा की स्वतंत्रता शिक्षा की कसौटी है, उनके अनुसार अद्वैतवादी और व्यावहारिक उद्देश्यशिक्षा ने सामंजस्य बिठाया है, नरसिंह पी. (2004) ने स्वामी विवेकानन्द और ऋषि बंकिम चंद्र देशभक्त और राष्ट्रवादी के रूप में के बीच एक आलोचनात्मक तुलना की।

धीमान कुलदीप कुमार (2007) ने विवेकानन्द के राजनीतिक मुद्दों पर अपने काम में दिखाया भारत में पुनर्जागरण काल में उन्होंने अद्वैत दर्शन को सफलतापूर्वक लागू किया। नाथ उमाशंकर (2011) ने अध्ययन किया कि कैसे विवेकानन्द ने पश्चिम को दिखाया कि हिंदू धर्म के दर्शन को सामाजिक रूप से सुसंगत मानवतावादी नैतिकता के रूप में अभ्यास किया जा सकता है। घोष अजाय, स्वामी तत्वसरानंद (2011) ने सामग्री विश्लेषण और व्याख्याशास्त्र को नियोजित करके स्वामी विवेकानन्द की शिक्षापूछताछ की विधि चार स्तंभों का पता लगाने का उद्यम किया। इस्लाम, मेरिना (2012) ने विवेकानन्द पर अपने कार्य में उनके दर्शन का विश्लेषण किया और दिखाया कि कैसे उन्होंने आध्यात्मिक स्तर पर शांति और मानव भाईचारे को बढ़ावा देने का प्रयास किया तथा अस्तित्व की वेदांतिक एकता की नींव। उन्होंने दोनों मठवासी तपस्या का और सामाजिक सेवा का प्रचार किया। विवेकानन्द का मिशन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों था। बसु, अरुण कुमार (2012) ने अपने काम 'विवेकानन्द: रवीन्द्र अनुववे' में बताया रवीन्द्रनाथ और विवेकानन्द के बीच संबंध दोनों धर्म और शिक्षा के संदर्भ में पूर्व और पश्चिम का एकीकरण करना समृद्ध भारत इस पर विश्वास करते थे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा संबंधी दार्शनिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण

सुब्रमण्यन (1958) ने महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। प्रमुख निष्कर्ष थे (i) गांधीजी के अनुसार अज्ञानता, उत्पीड़न और अन्याय से शिक्षा स्वतंत्रता-आजादी के संघर्ष से कम नहीं थी (ii) शिक्षा एक एक निश्चित गंतव्य के लिए गतिशील नेतृत्वकारी शक्ति थी (iii) गांधीजी की योजना की एक महत्वपूर्ण विशेषता उत्पादन कार्य की दिशा पर ध्यान दिया जा सकता है (iv) दूसरी ओर, टैगोर ने जीवन के बेहतर पक्षों पर जोर दिया। उसका शिक्षा में प्रयोगों का एक निश्चित सामाजिक उद्देश्य भी था, स्वदेशी संस्कृति के कच्चे माल के साथ एक सामाजिक संरचना का निर्माण करना। जस्तीसिंह (1972) ने एक शिक्षक के रूप में रवीन्द्रनाथ टैगोर पर एक अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य टैगोर के शैक्षिक दर्शन को प्रकट करना था। इस में अध्ययन, वर्णनात्मक पद्धति का पालन किया गया और यह पुस्तकालय पढ़ने तक ही सीमित था जिसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर पर पुस्तकों, पत्रिकाओं और लेखों के साथ-साथ

उनकी जीवनी पुस्तकें भी शामिल हैं। टैगोर और व्हाइटहेड के विचारों को व्यवस्थित किया गया , आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया और मूल्यांकन किया गया। दोनों विचारकों ने शैक्षिक प्रक्रिया के माध्यम से मूल्यों के विकास पर जोर दिया। दोनों ने अनुभवजन्य सत्य पर अपना विश्वास जताया, जो वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। उनके विचार में, अनुभवजन्य विज्ञान ने हमें तथ्यों का ज्ञान दिया और स्वयंसिद्ध विज्ञान ने हमें मूल्यों का ज्ञान दिया। दोनों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास था , इसलिए दोनों ने बौद्धिकता पर जोर दिया। दोनों ने सभी व्यक्तियों में बुनियादी अच्छाई पर जोर दिया , जो शिक्षा के माध्यम से पोषित और कायम रखा जा सकता है। टैगोर और व्हाइटहेड के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य दोनों व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना था। वे दोनों समग्रता के साथ-साथ अधिकतम संभव स्वतंत्रता देने में विश्वास रखते थे। टैगोर और व्हाइटहेड दोनों का विचार था की स्वतंत्रता और अनुशासन के बीच उचित संतुलन होना चाहिए। कठोर , नीरस और गतिशीलता, परिवर्तन आदि का पक्ष लेते हुए उनके द्वारा रूढ़िबद्ध शिक्षा की आलोचना की गई। वे शिक्षा में लचीलापन एवं किताबी ज्ञान के आलोचक थे जिसके कारण ऐसा हुआ तथ्यों की बिना सोचे-समझे स्वीकृति। दोनों ने विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता के विकास पर पूरा जोर दिया। दोनों ने युवाओं में रचनात्मक क्षमताओं को विकसित करने पर जोर दिया। दोनों ने शैक्षणिक संस्थान जिसने शिक्षार्थियों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया उनकी रचनात्मक कल्पना का विकास पर्यावरण पर जोर दिया। उन दोनों ने इस प्रक्रिया को पहचाना की शिक्षा तभी प्रभावी होगी जब व्यक्तियों में आत्म-साक्षात्कार की सृजनात्मक क्षमताएँ विकसित होंगी। दोनों ने सभ्यता के विकास के लिए मानव की प्राप्ति पर पर्याप्त बल दिया। दोनों ने पारिस्थितिक सद्भाव के लिए शिक्षा समकालीन सभ्यता के नैतिक, सौंदर्यवादी और मानवतावादी विषयों के पहलुओं शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने आग्रह किया कि संघर्ष समाधान और आपसी समझ के बंधन के निर्माण के माध्यम से एक स्थायी विश्व व्यवस्था अस्तित्व में लायी जानी चाहिए। टैगोर और व्हाइटहेड के दृष्टिकोण में समानताएं मौजूद थीं क्योंकि दोनों मानवतावादी , आदर्शवादी और पूर्णतावादी थे। [टैगोर और व्हाइटहेड का शिक्षा पर विचार-एक तुलनात्मक अध्ययन (1984)]। भट्टाचार्य, ए. (2009) ने अपने अध्ययन से पता चला कि टैगोर शिक्षा के अग्रणी विचारक हैं। उन्होंने सोचा कि भारत में अपने लोगों बच्चों और वयस्कों के लिए और दोनों लिंगों के लिए किस प्रकार की शिक्षा होनी चाहिए। मातृभाषा के लिए उनकी वकालत प्राकृतिक परिवेश में शिक्षा का माध्यम , रटंत विद्या का उनका विरोध , उनकी एक आदर्श भारतीय विश्वविद्यालय की अवधारणा, मॉड्यूलर पाठ्यक्रम संरचना पर उनके विचार और प्रमाणीकरण , दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा बहुत नवीन है। भट्टाचार्य, एस. (2014) ने अध्ययन में दिखाया कि टैगोर, 19वीं सदी में शायद दुनिया के सर्वश्रेष्ठ सामाजिक विचारकों और सुधारकों में से एक महान बुद्धिजीवी थे , व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के हर पहलू पर उनके विचार हैं , उनके विचारों में पूर्वी और पश्चिमी दोनों विचारधाराएँ किसी की भी पराकाष्ठा पाई जा सकती है। महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर , ये नाम, जिन्हें किसी रचनात्मक, साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में परिचय की आवश्यकता नहीं है। गांधी और टैगोर दोनों विश्व के महानतम शिक्षाविदों में से एक गिने जाते हैं। शिक्षा के दर्शन उनके द्वारा प्रतिपादित विचार संपूर्ण मानवता के लिए अत्यंत महत्व रखते हैं। वे आधुनिक भारत के निर्माण में शिक्षा के महत्व से अवगत थे। उन्होंने अपने उत्कृष्ट व्यक्तित्व से न केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को प्रबुद्ध किया।

टैगोर का शैक्षिक लेखन एक विशाल साहित्य है , जो अधिकतर बिखरा हुआ है ,स्वतंत्र निबंध, भाषण और पत्र , जिनकी बहुत कम संख्या पुस्तकों और पत्रिकाओं में संग्रहित है। बाकी या तो पुराने पत्रों में या पत्रिकाएँ में गुमनाम पड़े हैं , साथ ही, टैगोर की अधिकांश शिक्षारचनाएँ बांग्ला में हैं, और अभी तक उनका अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया गया है। टैगोर के पहले शैक्षिक लेखन ने बंगाल और कुछ लोगों का व्यापक ध्यान आकर्षित किया ,समय के साथ टैगोर साधना के संपादकीय स्तंभों में इस सामान्य शीर्षक "प्रसंग कथा" (प्रासंगिक वार्ता) विषय पर लिखते रहे। वह अपने रुख शिक्षा में मातृभाषा का स्थान पर अड़े रहे , लेकिन फिर भी उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अंग्रेजी एक भाषा के रूप में सिखाया जाना चाहिए , और वह भी प्रारंभिक वर्षों से , उचित मात्रा में और उचित मात्रा में अनुक्रम , केवल मातृभाषा के पूरक के रूप में। बीसवीं सदी के आगमन के साथ राष्ट्र के माध्यम से देश के सर्वांगीण उत्थान का टैगोर का विचार आत्मनिर्णय , व्यक्तिगत प्रयास और बलिदान अपने लेखन और कार्यों के माध्यम से सशक्त रूप से अधिक व्यक्त किये जा रहे थे। वह इसके मूल्य में बहुत बड़ा विश्वास रखते थे किसी राष्ट्र की प्रगति के लिए शिक्षा सबसे बुनियादी शर्त है और वह राष्ट्रीय शिक्षा परिषद में शामिल हुए जिसका उद्देश्य शिक्षा में सुधार लाना था। लेकिन टैगोर की सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा की मौलिक अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की आधिकारिक नीति से भिन्न थी। उन्होंने अपने देशवासियों से राष्ट्रीय समस्याओं को वस्तुनिष्ठ तरीके और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के मुख्य उद्देश्य पर ध्यान और ऊर्जा लगाना गांव को केंद्र मानकर और तर्कसंगत ढंग से देखने की अपील की। आखिरकार राजनीतिक और शैक्षिक दोनों क्षेत्रों में राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 1905 के अंत तक शांतिनिकेतन चले गए उन्होंने खुद को सक्रिय रूप से अलग कर लिया। टैगोर का इस काल के लेखन से उनकी इसी सोच का पता चलता है।

टैगोर ने 1905 में , छात्रों को अपने संबोधन में , कहा, "चत्रदेर प्रति सतीभासं।"स्वतंत्र प्रयासों से प्राप्त यथार्थवादी शिक्षा की वकालत की। उन्होंने लेख में "पूर्वप्रश्नेर अणुब्रिति, तर्क दिया, "यह याद रखना आवश्यक है कि यदि हम शिक्षा सरकार के हाथ में रखते हैं , वे उस शिक्षा के माध्यम से अपना स्वार्थ पूरा करेंगे , हमारा नहीं। वे ऐसी व्यवस्था करेंगे कि एक किसान रह सके अपने गांव में केवल एक किसान ; वे उसे भारत का सच्चा नागरिक बनाने की जहमत नहीं उठाएंगे। हम अपनी इच्छा के अनुरूप शिक्षा तभी दे सकते हैं जब हम अपने अंदर शिक्षा ग्रहण करेंगे, हाथ माँगना और ऑर्डर देना दोनों ही बेतुका है" (रवीन्द्र रचनावली, वी. बारहवीं, पृष्ठ 516)। टैगोर के शैक्षिक दर्शन के लिए एक अधिक मजबूत आधार लेख "शिक्षा-समस्या" (जून , 1906) में मिलता है , - हालाँकि यह सीधे तौर पर नहीं बता रहा हूँ , टैगोर यहाँ पहली बार अपने मूल बिंदु को स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा परिषद के साथ उनके बार-बार बयान में मतभेद है कि भारत में शिक्षा की वास्तविक राष्ट्रीय प्रणाली किसी विदेशी मॉडल की नकल पर आधारित हो सकती है। उनके अनुसार सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा वह है जो राष्ट्र के जीवन से जुड़ी हुई है और जो संचित के माध्यम से एक स्वाभाविक प्रयासों और देश के लोगों के पोषित आदर्शों और परंपराओं की प्रक्रिया है। इस मॉलेख में , वह उस चीज़ का विस्तृत और आलोचनात्मक विवरण देते हैं जिसे वह राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की महत्वपूर्ण विशेषताएं मानते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राथमिक सच्ची शिक्षा की शर्त विद्यार्थी जीवन की पूरी अवधि के दौरान अनुशासन (ब्रह्मचर्य) होना चाहिए। यह निबंध टैगोर की अपनी रचना का एक निश्चित और व्यापक विवरण प्रस्तुत करता है उन्होंने एक वास्तविक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की योजना बनाई, जिसने आने वाले कुछ वर्ष उनकी शैक्षिक गतिविधि को आकार दिया। प्रारम्भिक आन्दोलन पूर्णतः समाप्त हो गया ,

टैगोर ने अपने विचारों और गतिविधियों को विकसित हो रही विचारधारा की पूर्ति के लिए समर्पित करना शुरू कर दिया , इस दिशा में पहला महत्वपूर्ण लेखन "तपोवन" (जनवरी, 1910) है। इस लेख में टैगोर ने पहली बार एक नये विचार भावना की शिक्षा (बोधर साधना) का परिचय दिया और उन्होंने इसे इन्द्रियाँ और बुद्धि की शिक्षा शिक्षा से अलग किया। अपनी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारत को अपनी सभ्यता के विशिष्ट सत्य को खोजने और प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए , मुख्य रूप से व्यवसायवाद, साम्राज्यवाद या राष्ट्रवाद; वह सत्य सार्वभौमिकता है"

"स्त्री शिक्षा " (अगस्त, 1915) में - नारी की शिक्षा पर कुछ प्रकाश डाला गया है पाठ्यक्रम के दर्शन के बारे में टैगोर लिखते हैं , "जो कुछ भी जानने योग्य है, इसे पुरुषों और महिलाओं को समान रूप से जानना चाहिए, केवल ज्ञान के लिए नहीं लेकिन व्यावहारिक उपयोगिता जानने के लिए" (टैगोर, 1351 बी.एस., पृष्ठ 138)। बाद में लेख में वह अपनी बात स्पष्ट करते हैं। "ज्ञान में दो विभाग होते हैं: एक , शुद्ध ज्ञान; दूसरा, उपयोगितावादी ज्ञान। शुद्ध ज्ञान के क्षेत्र में, पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई भेद नहीं है; व्यावहारिक उपयोगिता में भेद विद्यमान है, महिलाओं को परिपक्व इंसान बनने के लिए शुद्ध ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, और सच्ची महिला बनने के लिए उपयोगितावादी ज्ञान" (टैगोर, 1351 बी.एस., पृ. 139). अतः शुद्ध ज्ञान के आधार पर पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई भी अंतर नहीं होना चाहिए लेकिन व्यावहारिक या उपयोगितावादी ज्ञान क्षेत्र में एक अंतर मौजूद है, यह उपयोगितावादी ज्ञान जिससे व्यक्ति को जीवन के उस क्षेत्र में सफल होने की मदद मिलनी चाहिए जिसमें वह वास्तव में और स्वाभाविक रूप से शामिल है। टैगोर ने अपनी संस्था में लड़कियों की शिक्षा को बराबर का स्थान दिया महिलाओं और लड़कियों के लिए एक छात्रावास बनाया था। इसे उस समय का भारतीय समाज में एक बहुत ही क्रांतिकारी कदम माना गया। "मेरा विद्यालय" (1916), यह टैगोर द्वारा अमेरिका में दिये गये व्याख्यानों में से एक है। यह शायद टैगोर द्वारा शांतिनिकेतन में अपने स्कूल पर लिखा गया यह सबसे व्यापक और पहला लेखन है। लेख में , टैगोर के सभी पिछले सिद्धांतों या विचारों को दोहराया गया है और पुनर्व्याख्या की गई। उन्होंने अपने स्कूल के संबंध में कुछ नई अवधारणाओं पर भी चर्चा की। (टैगोर, 1917सी, पृष्ठ 138)।

टैगोर का "द स्कूलमास्टर" (जून, 1924) का प्रकृति दर्शन विषय है। जो जापान में दिया गया एक व्याख्यान था। टैगोर ने अपने मौलिक तर्कों को आधार बनाया, यह धारणा है कि प्रकृति का अपना उद्देश्य बच्चे को उसकी संपूर्णता देना है। इस प्रकार, यह केवल स्वतंत्रता जिसे मनुष्य उसके विकास की पूर्णता के माध्यम से ही प्राप्त कर सकता है। उन्होंने तीन प्रकार की स्वतंत्रता प्रतिपादित की , मन की स्वतंत्रता, हृदय की स्वतंत्रता और इच्छा की स्वतंत्रता। मन की स्वतंत्रता वयस्कों की स्वतंत्रता के विपरीत है मन की एकाग्रता की प्रणाली और एक बच्चा तभी पूर्ण रूप से विकसित हो सकता है जब उसे स्वयं को अभिव्यक्त करने एवं स्वयं दुनिया का अन्वेषण करने की स्वतंत्रता दी जाए। दरअसल , इसी दर्शन के कारण टैगोर ने कभी अपने स्कूल के शरारती लड़कों के खिलाफ कोई जोर-जबरदस्ती या दंड का प्रयोग नहीं किया। उनका मानना है कि बच्चों को अपनी समझ, सहानुभूति के माध्यम से प्यार की स्वतंत्रता प्रदान करने में और मुफ्त साहचर्य में स्कूल शिक्षकों को मां की जगह लेनी चाहिए। अंत में, अपनी खुद की दुनिया बनाने में इच्छा की स्वतंत्रता या आत्मा की स्वतंत्र गतिविधि शामिल है। इस आदर्श को कार्यान्वित करने का तरीका है विद्यार्थियों को स्कूल आमंत्रित करना उसके विकास में भाग लेना। (टैगोर , अक्टूबर, 1924 बी)। टैगोर ने

अपने और रूसी शैक्षिक उद्देश्यों और प्रयोग में घनिष्ठ समानताएँ पाई , रूसियों का लक्ष्य भी जीवन की परिपूर्णता था। उनका शैक्षिक दर्शनगतिशील जीवन और जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध को मुख्य गुणों के रूप में शामिल किया गया। एक और बात जिसने टैगोर को प्रभावित किया वह थी सभी को शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में कला के रूप में दिया जाने वाला महत्व। लेकिन टैगोर ने व्यवस्था की आँख मूँद कर प्रशंसा नहीं की। उन्होंने व्यक्तिगत जरूरतों का त्याग और सामूहिक हित करते हुए शैक्षिक उत्पाद के उनके समान पैटर्न की आलोचना की। इसके अलावा , टैगोर इस सिद्धांत के पूरी तरह से खिलाफ थेसोवियत राज्य में तानाशाही कायम थी। उनका मानना था कि अच्छे सहयोग सेवैयक्तिकता और सामान्य कल्याण दोनों प्राप्त किए जा सकते हैं। रूस के मामले में भी, टैगोर को आशा है कि उन्होंने अपनी बौद्धिक शक्ति विकसित की है। यहां उनकी मुक्ति का मार्ग निहित है" (टैगोर , 1970, पृष्ठ 84) सबसे पुराने लेखन में से एक हैविलियम पियर्सन द्वारा शांतिनिकेतन (1915)। पियर्सन सबसे शुरुआती श्रमिकों में से एक थे, "इंग्लैंड से शांतिनिकेतन" वह 1912के अंत में शांतिनिकेतन की यात्रा पर आयेअप्रैल 1914 में वे अंततः वहाँ रहने और रवीन्द्रनाथ के साथ काम करने के लिए आये। उसने बंगाली बहुत जल्द सीख ली , और इससे उन्हें वहाँ के बच्चों से संवाद करने में के साथ-साथ शांतिनिकेतन के आसपास के आदिवासी समुदायों के लिए भी मदद मिली। उनकी पहली किताब स्कूल की गतिविधियों का सीधा लेखा-जोखा है। पुस्तक का परिचय किसके द्वारा लिखा गया है ? रवीन्द्रनाथ ने जहां एक बार फिर स्कूल की उत्पत्ति और स्कूल के माहौल का जिक्र किया , यह पुस्तक पियर्सन और उनकी जापान यात्रा के दौरान लिखी गई थीपुस्तक में उल्लेख किया गया है कि यद्यपि वह उस समय आश्रम के बाहर थे लेकिन हर समय इसके बारे में सोचते रहते थे, (पियर्सन, 1965, पृष्ठ 10)। छात्र समितियाँ, पत्रिकाएँ, खुली कक्षाएँ, भ्रमण, छात्रों और शिक्षकों के बीच घनिष्ठता , खेल और दैनिक दिनचर्याजिन चीजों के बीच वहस्कूलों के बारे में वर्णित हैं वहाँ150 छात्रों पर लगभग 2 शिक्षक और कर्मचारी थे। स्कूल में कोई हेडमास्टर नहीं थास्वयं शिक्षकों द्वारा निर्वाचित एक कार्यकारी समिति के प्रबंधन के अधीन थाऔर इसके सदस्यों में से एक को प्रत्येक वर्ष कार्यकारी प्रमुख के रूप में चुना जाता था। प्रत्येक विषय में एकशिक्षकों को अध्ययन निदेशक के रूप में चुना गया और वह अन्य शिक्षकों के साथउसी विषय पर पुस्तकों और अपनाई जाने वाली विधियों पर चर्चा करता था। हालाँकि , प्रत्येक शिक्षकजिस तरीके से वह सबसे अच्छा सोचते थे , अपने तरीके से काम करने की उन्हें पूरी आजादी थी। अगरटैगोर शांतिनिकेतन में मौजूद थे , वे बैठकों की अध्यक्षता करते थे और पढाते भी कक्षाएं थे (पियर्सन , 1965, पृ. 20-21)।

सन्दर्भ

1. आचार्य. (1974). और सिद्धांत में प्रख्यात भारतीय विचारकों का योगदानउन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान भारतीय शिक्षा का अभ्यासमहाराष्ट्र का विशेष संदर्भ.
2. अविनाशीलिंगम, टी.एस. (1974). स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन। कोयंबटूर: श्री रामकृष्ण मिशन विद्यालय।
3. अंजू, आर. (2000). स्वामी के विशेष संदर्भ में महिलाओं की भारतीय अवधारणा विवेकानन्द. एम फिल थीसिस, केरल विश्वविद्यालय।
4. अरुणभास्कर. (2004)।विवेकानंद का व्यावहारिक वेदांत।एमफिल थीसिस, दर्शनशास्त्र विभाग, केरल विश्वविद्यालय।

5. बाबू, सूरज, पी.वी. (2011)। शिक्षा और उसके बारे में श्री नारायण गुरु का दृष्टिकोण उभरते समाज में प्रासंगिकता। डोएटोरल थीसिस, कोट्टायम: महात्मा गांधीविश्वविद्यालय, शैक्षणिक विज्ञान विभाग।
6. बर्, जी. और सीट्सा। (1954) अनुसंधान के तरीके. न्यूयॉर्क: एप्पलटन सेंचुरी'एस.पी.
7. बेहरा (2011)। महात्मा गांधी और टैगोर का शैक्षिक दर्शन: एतुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ एजुकेशन खंड 1 अंक iii .पीपी.1-4
8. बेस्ट, जे.डब्ल्यू. और कहन, जे.वी. (1995)। शिक्षा में अनुसंधान. नई दिल्ली: अप्रेंटिस हॉल, पी.
9. भट्टाचार्य अशोक. (1999)। टैगोर की शिक्षा की अवधारणा। टैगोर की अवधारणाएँ, गांधी एंड फ्रियरियर.सेंस पब्लिशर्स, बोस्टन।
10. भारती और भास्कर राव। (2004)। स्वामी का शैक्षिक दर्शन विवेकानन्द और जॉन डेवी। नई दिल्ली: ए.पी.एच. प्रकाशन निगम।
11. भारती, एम.सी. (1987)। के शैक्षिक दर्शन का एक तुलनात्मक अध्ययन इकबाल और अरबिंदो। अप्रकाशित डॉक्टरेट थीसिस , अमृत कौल द्वारा उद्धृत, ओपी.सीआईटी, पी.27.
12. ब्लैक्सटर, एल. एटा. (1999)। शोध कैसे करें. चेन्नई: विवा बुक्स, पृष्ठ 3
13. बुच, एम. बी. (एड)। (1974) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन सोसाइटी फॉर अनुसंधान एवं विकास. बड़ौदा, पृष्ठ 36.
14. बुच, एम.बी. (एड)। (1972) शिक्षा में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण। का केंद्रशिक्षा में उन्नत अध्ययन , बड़ौदा, डॉक्टोरल थीसिस, पी. 34
15. बुच, एम.बी. (1974). शिक्षा में अनुसंधान का एक सर्वेक्षण। (एडु). बड़ौदा: एम.एस विश्वविद्यालय। पी। 31
16. बुच, एम.बी. (1972)। शिक्षा में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण। बड़ौदा: समाज अनुसंधान एवं विकास के लिए, पृष्ठ 31.
17. चार्लू. (1974). शिक्षा में अनुसंधान का एक सर्वेक्षण।
18. चंद्रा, एस.एस. (1984)। श्री अरबिंदो का शैक्षिक दर्शन। अप्रकाशित डॉक्टरेट थीसिस , मीराट विश्वविद्यालय, चौथे सर्वेक्षण में बुच द्वारा प्रस्तुत, पृष्ठ 60।
19. कॉर्नेलियस जे.जे. (1930). रवीन्द्रनाथ टैगोर; भारत के स्कूल मास्टर. कोलंबिया विश्वविद्यालय